फार्म फॉरवर्ड

वर्ष-1, अंक-3: नवंबर 2024

जायका कृषि परियोजना-2 की मासिक ई-पत्रिका

Farm Forward

MONTHLY E-PAPER OF HPCDP (PHASE-II), JICA-ODA

जायका मिशन ने मंडी और हमीरपुर में देहात सम्बंधित गतिविधियों को जांचा

हमीरपुर। जायका मिशन का दो दिवसीय दौरा 4 और 5 नवम्बर, 2024 को हुआ, मिशन ने किसानों को सीधे बाजार से जोड़ने वाली 'देहात' कार्यक्रम की समीक्षा की, जिसे डीएक्स लैब और जायका कृषि परियोजना-2 द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। मिशन में जायका-टोक्यो से अधिकारी सुयामात्सु तोमोयो और जायका-इंडिया की विकास विशेषज्ञ निष्ठा वेंगुर्लेकर शामिल थीं।

प्रतिनिधिमंडल ने 4 नवंबर को हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन परियोजना-2 के तहत डीएक्स लैब द्वारा संचालित 'डिजिटल सॉल्यूशंस इन एग्रीकल्चर' प्रूफ ऑफ कॉन्सेप्ट (पीओसी) कार्यक्रम का अध्ययन किया। इसका उद्देश्य छोटे किसानों को सीधे बाजार से जोड़ना और उनकी आय में वृद्धि करना है।

इस मिशन के दौरे का उद्देश्य परियोजना में लागू किए जा रहे देहात कार्यक्रम की प्रगति का मूल्यांकन करना था। मिशन ने मंडी के दौरे के दौरान कार्यक्रम के लाभार्थियों के साथ बातचीत की और 5 नवंबर को हमीरपुर स्थित जायका कृषि परियोजना के मुख्यालय में एक ऑनलाइन बैठक भी की। इस मिशन ने डीएक्स लैब के माध्यम से किसानों को सीधे बाजार से जोड़ने के लाभों का आंकलन किया।

परियोजना निदेशक डॉ. सुनील चौहान ने बताया कि हिमाचल प्रदेश के किसानों को डिजिटल उपकरणों के उपयोग के साथ सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो कृषि क्षेत्र में नवाचार और स्थिरता को प्रोत्साहित करेगा और किसानों की आय में स्थायी वृद्धि का मार्ग प्रशस्त करेगा। इस दो दिवसीय दौरे में परियोजना से सम्बंधित अन्य अधिकारी भी शामिल रहे।

'देहात' इस परियोजना में एक डिजिटल पार्टनर के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, ताकि किसानों को लाइव मंडी दरें, कृषि संबंधी जानकारी और विशेषज्ञ परामर्श प्राप्त हो सके। यह संपूर्ण एग्री-टेक प्लेटफॉर्म किसानों को बीज, उर्वरक, कीटनाशक जैसे कृषि इनपुट्स की उपलब्धता के साथ-साथ फसल कटाई के बाद के उत्पादों के बेहतर विपणन के लिए समाधान प्रदान करता है। उन्होंने जानकारी दी कि किसानों को व्हाट्सएप और अन्य मोबाइल ऐप्स के माध्यम से बाजार की जानकारी प्राप्त हो रही है, जिससे उन्हें बेहतर खेती प्रबंधन और उपभोक्ताओं तक सीधे उचित कीमत पर पहुंचने में मदद मिल रही है।

25 नवंबर से सब्जी पौध की नई खेप किसानों के लिए उपलब्ध : उत्कृष्टता केंद्र बड़ा

हमीरपुर। उत्कृष्टता केंद्र बड़ा (नादौन), हमीरपुर और आसपास के किसानों के लिए किसी सौगात से कम नहीं है। यहां सब्जियों की पौध की पहली खेप की सफल आपूर्ति और किसानों की अच्छी प्रतिक्रिया को देखते हुए, दोबारा पौध तैयार करने का कार्य शुरू हो गया है। अब कुछ ही दिनों में इस केंद्र से तीन प्रमुख फसलों की उच्च गुणवत्ता वाली पौध किसानों को उपलब्ध होगी, जिसमें लगभग 48 हजार फूलगोभी, 12 हजार पत्तागोभी और 15 हजार ब्रोकली की पौध शामिल है। यहां तैयार की गई पौध मिट्टी रहित होती है, जिससे मिट्टी जनित बीमारियों का जोखिम कम हो जाता है। पौध की जड़ें मजबूत होती हैं, जिससे खेत में रोपाई के बाद जड़ पकड़ने में समय भी कम लगता है। इसके परिणामस्वरूप, फसल की वृद्धि तेजी से होती है और किसानों की उपज समय से पहले बाजार में पहुंचती है, जिससे उन्हें बेहतर मूल्य मिलता है। स्वस्थ और निरोगी पौध का एक और लाभ यह है कि इसमें कम रासायनिक छिड़काव की आवश्यकता होती है, जिससे उत्पाद सुरक्षित होता है और उपभोक्ताओं का स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहता है। परियोजना निदेशक, डॉ. सुनील चौहान ने बताया कि पिछली बार किसानों की प्रतिक्रिया को देखते हुए यह निर्णय लिया गया कि जल्दी से जल्दी किसानों को पौध उपलब्ध करवाई जाए, ताकि वे अपने खाली खेतों में फसल की बुवाई कर सकें। उन्होंने कहा कि यह प्रक्रिया अब निरंतर जारी रहेगी। इस बार, किसान 25 नवंबर के बाद कभी भी इस उत्कृष्टता केंद्र से स्वस्थ पौध प्राप्त कर सकते हैं। डॉ. चौहान ने हमीरपुर जिले और किसान विज्ञान केंद्र, बड़ा के आसपास के किसानों से अपील की है कि वे इस केंद्र का अधिकतम लाभ उठाएं और नकदी फसलों की खेती की ओर कदम बढ़ाएं, क्योंकि पारंपरिक फसलों की तुलना में नकदी फसलें अधिक लाभकारी साबित हो रही हैं। कोई भी किसान जो इस मिट्टी रहित पौध को अपने खेत में लगाना चाहता है, वह समय रहते उत्कृष्टता केंद्र में अपनी मांग दर्ज कर सकता है या जिला परियोजना प्रबंधक इकाई हमीरपुर में संपर्क कर सकता है। पौध की कीमत मात्र 2 रुपए प्रति पौध रखी गई है, जिससे सभी किसान इसका लाभ उठा सकें।

जापान के प्रतिनिधिमण्डल ने किया जिला चम्बा का किया दौरा : सिखाये शैप अप्रोच के नए गुर

चम्बा। हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन परियोजना (चरण -2) के माधयम से जिला चम्बा में 15 सिंचाई परियोजनाओं का निर्माण करवाया जा रहा है। इनके बनने से 271 हैक्टेयर भूमि को साल भर सिंचाई सुविधा प्रदान की जाएगी। हाल ही में जापान के प्रतिनिधिमण्डल ने जापान से फिरुचि सींगो, ताकेशी आईकेडा, टाकागाकी टाकाहीरो व उमेश बाबू (भारत से) जिनका उद्देश्य जिला में शैप मार्केटिंग तकनीकों के स्थाई संचालन और प्रबंधन गतिविधियों का आंकलन करना था। प्रतिनिधिमंडल द्वारा उदयपुर पंचायत के डूला उप परियोजना का दौरा किया, उपस्थित प्रतिनिधियों के द्वारा जिला चम्बा का दौरा किया गया। इस किसानों से विस्तृत चर्चा और परियोजना के अधिकारियों द्वारा शैप मार्केटिंग पर दिए गये प्रशिक्षणों की जानकारी का जायजा लिया। फिरुचि सींगो व ताकेशी आईखेड़ा ने जल उपयोगकर्ता समूहों पर भागीदारी सिंचाई प्रबंधन, शेप मार्केटिंग तकनीकों के स्थाई संचालन और प्रबंधन की जानकारी दी गई। इस अवसर पर जायका शेप इंडिया के प्रतिनिधि ने बताया कि फसल विविधीकरण परियोजना एवं शेप मार्केटिंग तकनीकें एक विस्तार और परामर्शी दृष्टिकोण है। इसका लक्ष्य किसानों की मानसिकता को बदलने में मदद करना है। इस मौके में खण्ड परियोजना प्रबंधन इकाई के सभी अधिकारी मौजूद रहे।

एम2 लैबो के मुख्य विपणन अधिकारी ने किया परियोजना क्षेत्र का दौरा

हमीरपुर। एम2 लैबो भारत प्राइवेट लिमिटेड के मुख्य विपणन अधिकारी प्रसून अग्रवाल ने 25 और 26 नवंबर को जाइका मुख्यालय हमीरपुर और जिला परियोजना कांगड़ा का दौरा किया। इस दौरे का मुख्य उद्देश्य परियोजना के लाभार्थी किसानों की विभिन्न चुनौतियों की जानकारी लेना जिसमें एम2 लैबो इन किसानों की उन्नति और खेती में आने वाली समस्याओं का कैसे निदान करने के लिए अपनी भूमिका निभा सकती है। दिन की शुरुआत परियोजना मुख्यालय हमीरपुर में बैठक करके की इसमें एम2 लैबो द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी जिसमें उन्होंने निंजा टनल, जैविक उर्वरक और वेजी बस के बारे में चर्चा की, इस बैठक की अध्यक्षता राजेश कुमार, उप परियोजना निदेशक द्वारा की गई इस बैठक में परियोजना के अन्य अधिकारी भी शामिल हुए। इसके बाद कन्वर्जेन्स साइट महरून, हमीरपुर का दौरा किया जोकि खंड परियोजना प्रबंधन इकाई, हमीरपुर के अंतर्गत आती है। एम2 लैबो भारत प्राइवेट लिमिटेड के मुख्य विपणन अधिकारी द्वारा किसानों से सब्जी उत्पादन में आने वाली विभिन्न चुनौतियों के बारे में पूछा इसके साथ ही सब्जी उत्पादकों के खेतों का दौरा भी किया। दूसरे दिन की शुरुआत प्रसून अग्रवाल द्वारा सिंचाई परियोजना रेडुआं कूहल जोकि खंड परियोजना प्रबंधन इकाई, धर्मशाला के किसानों के साथ बैठक करके की, जिसमें किसानों से चर्चा करते हुए उन्होंने कृषि संबन्धित समस्याओं के बारे में जानकारी ली और उन्होंने बताया कि जापान में कैसे उन्नत तकनीकों का प्रयोग अपनी फसलों के लिए किया जाता है, जिससे वहां के किसान थोड़े से खर्चे से अधिक आमदनी कमा लेते हैं। इसी भावना के साथ एम2 लैबो भारत प्राइवेट लिमिटेड आप सब किसानों के साथ काम करने की इच्छुक है। इसके बाद बीज गुण फार्म भट्ठू पालमपुर का दौरा किया। अंत में परियोजना निदेशक डॉ. सुनील चौहान की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया जिसमें, उन्होंने कहा कि परियोजना आपके साथ काम करने की इच्छुक है, उन्होंने जोर देकर कहा कि पहले हम इसको छोटे स्तर से शुरू करेंगे, ताकि लाभार्थी किसान आपकी उन्नत तकनीकों का उपयोग करके अंतराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप फसल का उत्पादन करना सिख सकें, इसके तत्पश्चात बड़े स्तर पर किसानों को प्रोत्साहित करके अंतराष्ट्रीय बाजार तक उनकी उपज को पहुंचाने में परियोजना मदद कर सके।

परियोजना अधिकारियों ने राजस्थान में जाकर लिया शैप अप्रोच पर प्रशिक्षण

छोटे किसानों को सशक्तिकरण करने के लिए फसल पैदा करने से पहले मार्केट ओरिएंटेड अप्रोच को उनका हथियार बनाने के लिए योजना चला रही है जिसको कि शैप (स्मॉलहोल्डर हॉर्टिकल्चर एंपावरमेंट प्रमोशन प्रोजेक्ट) कहा जाता है। हिमाचल प्रदेश में ''हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन परियोजना-2'' के अंतर्गत 296 परियोजना के लक्षित गांवों में सभी किसानों को शिक्षित और प्रशिक्षित करने का कार्य किया जा रहा ताकि किसानों की आमदनी को बढ़ोतरी को सुनिश्चित करके परियोजना के फसल विविधीकरण के उद्देश्य को अच्छे व प्रभावी रूप से पूरा किया जा सके। इसी को आगे बढ़ाते हुए 20 और 21 नवम्बर, 2024 को जापान के प्रतिनिधि सहित जापान इंटरनेशनल कॉरपोरेशन एजेंसी पोषित शेप कांसेप्ट के तहत विभिन्न राज्यों के अधिकारियों ने राजस्थान के जयपुर और कोटा क्षेत्रों का भ्रमण किया। इस प्रतिनिधिमंडल में हिमाचल प्रदेश में चल रही हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन योजना (चरण-2) के डॉ. बाबर मलिक, डॉ. विनीत और डॉ. आकाश राणा ने भाग लिया, इन्होंने बूंदी जिला के नीम का खेड़ा गांव तथा किशनगंज क्षेत्र के अमलावदा गांव का भ्रमण कर किसानों से विस्तृत चर्चा करते हुए लघु बागवानी सशक्तिकरण एवं संवर्धन योजना के तहत कम लगात से अच्छे मुनाफे के बारे में जानकारी ली।

इस भ्रमण का एक मात्र उद्देश्य राजस्थान जल क्षेत्र आजीविका सुधार परियोजना का उद्देश्य क्षेत्र के किसान लाभार्थियों की आजीविका में सुधार के बारे में जानना था। जापान के प्रतिनिधि एवं देश के आठ राज्यों के उच्च अधिकारियों का भ्रमण क्षेत्र के किसानों को अपनी फसलों में आधुनिक तकनीक को अपनाने के लिए जागरूक करना था।

जिलावार परियोजना के तहत चार दिवसीय ''रिव्यू मीटिंग'' का किया आयोजन

पालमपुर/मण्डी/हमीरपुर/सोलन, हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन परियोजना (चरण-2) के तहत राज्य परियोजना प्रबंधन इकाई ने 18 नवंबर से 23 नवंबर, 2024 तक चार दिवसीय रिव्यू मीटिंग का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य परियोजना के विभिन्न गतिविधियों की प्रगति पर विस्तृत चर्चा करना था। यह बैठक प्रदेश के चार प्रमुख जिलों—पालमपुर, मंडी, हमीरपुर और सोलन में आयोजित की गई, जहां प्रत्येक जिला परियोजना प्रबंधन इकाई के मुख्यालयों से विभिन्न परियोजना खण्ड प्रबंधन इकाई के सदस्य उपस्थित हुए। बैठक में परियोजना के कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और आगामी कदमों पर गहन विचार-विमर्श किया गया। बैठक में कई महत्वपूर्ण विषयों पर विचार किया गया, जिनमें निर्माण से पहले और बाद में डीपीआर (डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट्स) और टेंडरिंग की स्थिति और उप-परियोजनाओं के तहत विभिन्न कार्यों की स्थिति शामिल थीं। अधिकारियों ने उप-परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की और परियोजना के तहत चल रहे निर्माण कार्यों की गुणवत्ता तथा पूरे होने वाले कार्यों की समीक्षा की ताकि इन उप परियोजनाओं को कृषक विकास संघों को सौंपा जा सके। इसके अतिरिक्त कृषक विकास संघ के गठन, पंजीकरण, उप परियोजना विकास योजना को तैयार करना और ऑनलाइन बेसलाइन सर्वे की स्थिति पर भी चर्चा की गई, ताकि परियोजना के प्रत्येक घटक को सही तरीके से लागू किया जा सके। इसके अलावा, मॉडल उप-परियोजनाओं की स्थिति पर भी ध्यान केंद्रित किया गया, जहां सीडीपी (फसल विविधीकरण योजना) कार्यान्वयन शुरू हो चुका है या वित्तीय वर्ष 2024-25 में शुरू होने वाला है। बैठक में परियोजना स्थलों, पीएमवीआरपी क्लस्टरों और जायका सब्जी गार्डन की स्थिति पर भी चर्चा की गई। बैठक में उन उप-गतिविधियों को और अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने पर जोर दिया गया। यह बैठक परियोजना के कार्यान्वयन में तेजी लाने और फसल विविधीकरण के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुई। इन बैठकों को संबोधित करते हुए परियोजना निदेशक डॉ. सुनील चौहान ने निर्माण कार्यों के बाद होने वाली सभी गतिविधियों को धरातल में उतार कर लाभार्थी किसानों को बाजार से जोड़ा जा सके।

उपस्थित अधिकारियों ने समय पर लक्ष्यों को पूरा करने और कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए ,साथ ही शैप में लगे सभी अधिकारीयों को अपने काम के प्रति गंभीर होकर इनका समय पर निष्पादन करने का आह्वान किया ताकि समय रहते किसानों को सिंचाई की सुविधा दे सकें और निर्माण कार्यों

अपनी बगिया को साग-सब्जी से रखेंगे भरपूर, इससे परिवार रहेगा बीमारियों से दूर

जिला मंडी ने सिंचाई परियोजनाओं को पूरा करने के लिए बढ़ाये कदम

मंडी। जिला परियोजना प्रबंधक इकाई, मंडी के अंतर्गत आने वाले खंड परियोजना प्रबंधन इकाई, मंडी और गोहर के द्वारा दो सिंचाई परियोजनाओं का निर्माण कार्य पूरा करवाकर क्रमश: 5 अक्टूबर 2024 और 16 अक्टूबर 2024 को आगे के रखरखाव के लिए संबंधित किसान विकास संघ को सौंपा। जिसमें से एक बहाव सिंचाई उप परियोजना जाझर नाला से जराल रोपा जिसका कमांद क्षेत्र 9.45 हेक्टेयर है। इसकी निर्माण लागत लगभग 31 लाख रुपये और इसके बनने से 82 किसान लाभान्वित हुए। दूसरी सिंचाई परियोजना नोगी खड्ड-कांडलू जिसका खंड परियोजना प्रबंधन इकाई, गोहर के द्वारा निर्माण करवाया इसको बनाने में लगभग 47 लाख रुपए खर्च किए तथा इसके बनने से 182 लाभार्थी किसान अब अपनी 11.84 हेक्टेयर खेतों में पानी दे सकेंगे। इसी तरह जिला परियोजना प्रबंधक इकाई, मंडी के अंतर्गत आने वाले खंड परियोजना प्रबंधन इकाई, मंडी, गोहर, सरकाघाट और कुल्लू में फार्म प्रबंधन और बुक कीपिंग, अभिविन्यास और आवश्यकता मूल्यांकन, उद्देश्य और मानदंड, बुनियादी इंजीनियरिंग कौशल, सिंचाई और जल प्रबंधन, फसल पैटर्न और व्यवस्था, विषयों पर 103, एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करवाया गया, जिसमें कुल 3382 किसानों ने भाग लिया। 6 उप परियोजनाओं में गोभी वर्गीय फसलों पर 25 हेक्टेयर से अधिक कमांद क्षेत्र के तहत प्रदर्शन प्लाट लगाए गए। 7 उप परियोजनाओं में 25 हेक्टेयर से कम कमांद क्षेत्र में प्याज, मटर पर प्रदर्शन प्लाट लगाये गए। 5 उप-परियोजना में लहसुन और आलू कार्यशाला के तहत प्रदर्शन प्लॉट लगाये गये। खंड परियोजना प्रबंधन इकाई, कुल्लू की विभिन्न उप-परियोजनाओं में 7 नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया। परियोजना प्रबंधन, मंडी ने परियोजना के द्वारा चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों को जांचने के लिए दिनांक 16 और 17 अक्टूबर 2024 को एफआईएस नोगी खड्ड-कांडलू, कांडलू-बिथरी, शनि मंदिर-पंचक्कर और बधारनु गिरझनू (बीपीएमयू गोहर), दिनांक 9 से 11 नवम्बर, 2024 को एफआईएस गौशाल से खाबनंग, मयूर कूहल गेमूर और एफआईएस वार्ति (तिन्नो) (बीपीएमयू कुल्लू) का दौरा किया। शैप दृष्टिकोण और फसल कैलेंडर बनाने की गतिविधि के बारे में जागरूकता कार्यशाला 23 अक्टूबर, 2024 को सिंचाई परियोजना पाधर से आरंग में आयोजित की गई जिसमें 50 किसानों ने भाग लिया।

महीने भर की जिला परियोजना पालमपुर की कुछ उपलब्धियां

पालमपुर। जिला परियोजना पालमपुर के अंतर्गत आने वाले विभिन्न खंड परियोजना प्रबंधन इकाइयों द्वारा 179 एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्यतय फार्म प्रबंधन और बहीखाता, अभिविन्यास और आवश्यकता मूल्यांकन, उद्देश्य और मानदंड, बुनियादी इंजीनियरिंग कौशल, सिंचाई और जल प्रबंधन, प्रबंधन समिति के सदस्यों की भूमिका और जिम्मेदारियों के विषयों पर किसानों को प्रशिक्षित किया गया, इन प्रशिक्षण शिविरों में कुल 5852 किसानों ने भाग लिया। जिला परियोजना पालमपुर द्वारा अब तक कुल 93 कृषक विकास संघ समितियां बनाई, जिसमें से अब तक 81 कृषक विकास संघ समितियों को पंजीकृत किया गया है। जिला परियोजना प्रबंधन इकाई, पालमपुर द्वारा जायका मुख्यालय मिशन के चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का सफलता पूर्वक दौरा करवाया, इस चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल में सुश्री शिनो काटो और श्री ताकाहिरो कोइके (जायका मुख्यालय के प्रतिनिधि) के साथ-साथ श्री केन कुनीडा और सुश्री युकारी इनागाकी (जायका इंडिया के प्रतिनिधि) शामिल थे। इस दौरे के दौरान संघ कूहल के निर्माण कार्य की समीक्षा करके इस सिंचाई परियोजना को स्थानीय कृषक विकास संघ को सौंपा गया। 24 अक्टूबर 2024 को ज्वाली में कृषि विभाग द्वारा आयोजित किसान मेले में जिला परियोजना की ओर से एक प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें माननीय कृषि मंत्री प्रो. चंद्र कुमार चौधरी के द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। यह प्रदर्शनी परियोजना चरण-2 के तहत कार्यान्वित की जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से लगाई गई थी। इस कार्यक्रम में एचपीसीडीपी चरण-2 के दो किसानों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित भी किया गया।

कम से कम दो लेख होने चाहिए प्रकाशित : परियोजना मीडिया सलाहकार द्वारा किया आह्वान

हमीरपुर। दिनांक 26 अक्टूबर, 2024 को जिला परियोजना प्रबंधन इकाई, मंडी के सभागार में राजेश्वर सिंह, परियोजना मीडिया सलाहकार, हमीरपुर की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। जिसमें जिला परियोजना अधिकारी, डॉ. हेम राज और परियोजना के अन्य अधिकारी भी शामिल थे। मीडिया सलाहकार ने बताया कि जब आप किसी भी सिंचाई परियोजना में जाते हैं तो उच्च रिज़ॉल्यूशन की तस्वीरें (कम से कम 1 एमबी) और वीडियो लेनी चाहिए और रिकॉर्डिंग इस तरह से की जानी चाहिए कि दर्शक को दिखाई जाने वाली गतिविधि के बारे में उचित विचार मिल सके। जो भी कंटेंट आप दर्शकों को दिखाना या पढ़वाना चाहते हों, वो आसानी से समझ आ जाए और परियोजना में चल रही विभिन्न गतिविधियों से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं को शामिल किया जाए उसके महत्व पर ध्यान केंद्रित किया। मीडिया सलाहकार ने बताया कि सभी खंड परियोजना प्रबंधन इकाइयों द्वारा हर महीने समाचार पत्र में कम से कम दो लेख प्रकाशित किए जाने चाहिए और विशेष आयोजन की रिपोर्टिंग तुरंत करने के निर्देश भी दिए ताकि राज्य परियोजना प्रबंधन इकाई इसमें तुरंत कार्यवाही करके इसको सोशल मीडिया और प्रिंट मीडिया में भेज सके। उन्होंने इस बैठक के माध्यम से सभी को निर्देश दिए कि जो भी सिंचाई परियोजना का निर्माण किया जा रहा है उसके निर्माण के पहले और हर गतिविधि के उच्च रिज़ॉल्यूशन की तस्वीरें और वीडियो आपके कंप्यूटर में फोल्डर बना होना चाहिए, ताकि कभी भी राज्य परियोजना प्रबंधन इकाई, हमीरपुर को उनकी जरूरत पड़े तो आप तुरंत उनको उपलब्ध करवा सकें।

शिटाके मशरूम खेती प्रशिक्षण केंद्र से जुड़ कर : किसान हो सकते हैं मालामाल

शिटाके मशरूम खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम किया आयोजित

पालमपुर। 21 से 26 नवम्बर, 2024 तक शिटाके मशरूम खेती प्रशिक्षण केंद्र, पालमपुर में खण्ड परियोजना प्रबंधन इकाई, धर्मशाला के किसानों के लिए शिटाके मशरूम खेती पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सिंचाई परियोजना भादुल, कमेड़ और सिंचाई परियोजना पटलुन कूहल से आए किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को शिटाके खेती पर प्रशिक्षित करना था, ताकि वह हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन परियोजना (चरण-2) के तहत सब्जी की खेती में विविधता लाने के साथ-साथ शिटाके मशरूम उगाकर अपनी आय में वृद्धि कर सकें। 6 दिनों में किसानों को शिटाके खेती पर 'व्यावहारिक प्रशिक्षण' दिया गया, जिसमें शिटाके खेती के लिए कमरा/पॉलीहाउस तैयार करना, आरटीएफ ब्लॉक खोलना, फसल चक्र के 6 महीने के दौरान पहला फ्लश लेना और उसके बाद के फ्लश लेना शामिल था। किसानों को शिटाके मशरूम की सफल खेती, कटाई तकनीक, रोग प्रबंधन आदि के लिए सांस्कृतिक संचालन पर प्रशिक्षित किया गया। इसके बाद 27 और 28 नवंबर, 2024 से इन किसानों को पोस्ट हार्वेस्ट पर प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें किसानों को शिटाके मशरूम की कटाई के बाद प्रसंस्करण और रख-रखाव पर प्रशिक्षित किया गया। बताते चलते हैं कि हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण संवर्धन परियोजना (चरण-2) के दौरान शिटाके मशरूम खेती प्रशिक्षण केंद्र, पालमपुर को बनवाया गया था जिसका एक मात्र उद्देश्य था कि हिमाचल प्रदेश के किसान भी शिटाके मशरूम की खेती करके अपनी आजीविका कमा सकें। इस केंद्र में विशेष रूप से शिटाके मशरूम ब्लॉक का उत्पादन किया जाता है, यहां से आम किसान 200 रुपये के हिसाब से ब्लॉक खरीद सकता है।

शिटाके मशरूम शरीर में कैल्शियम के अवशोषण को बढ़ावा देना, वजन घटाने में सहायता करना और त्वचा को स्वस्थ बनाए रखना शामिल है। यह मशरूम त्वचा की झुर्रियों को कम करने में मदद करता है, जिससे त्वचा हमेशा जवान और ग्लोइंग बनी रहती है। हमारे किसान समूहों ने इसे विभिन्न रूपों में तैयार किया है जैसे ताजे मशरूम, सुखाए हुए मशरूम, फ्लेक्स और पाउडर, ताकि इसे उपभोक्ता अपनी आवश्यकता अनुसार या विभिन्न व्यंजनों में इनका इस्तेमाल कर सके।

जम्मू और कश्मीर के आधिकारियों तथा किसानों ने शिटाके खेती प्रशिक्षण केंद्र का किया दौरा

जम्मू और कश्मीर के किसानों के दो समूहों ने अधिकारियों के साथ शिटाके खेती प्रशिक्षण केंद्र का दौरा किया

1. 05-नवंबर-2024 (कृषि विभाग, जम्मू और कश्मीर सरकार के 2 अधिकारियों के साथ 40 किसान)

2. 23-नवंबर-2024 (कृषि विभाग, जम्मू और कश्मीर सरकार के 2 अधिकारियों के साथ 17 किसान)

इन यात्राओं का उद्देश्य जम्मू और कश्मीर के किसानों के बीच शिटाके मशरूम की खेती के बारे में ज्ञान और कौशल को बढ़ाना था। इन यात्राओं का उद्देश्य किसानों में शिटाके मशरूम की खेती के प्रति रुचि पैदा करना और उसे बढ़ाना था, जिसका अंतिम लक्ष्य शिटाके मशरूम की खेती के माध्यम से उनकी आय में वृद्धि करना था।

सोलन जिला में जायका परियोजना द्वारा प्रदर्शन बीज फार्म को किया जा रहा है विकसित

सोलन। जायका परियोजना के तहत प्रदेश में तीन प्रदर्शन बीज फार्म विकसित किए जा रहे हैं जिसमें से एक सोलन जिले में प्रस्तावित है, जिसका नाम सब्जी प्रदर्शन स्टेशन, बैरटी है, यह सोलन-सुबाथू राज्य राजमार्ग पर स्थित है। इस फार्म का कुल क्षेत्रफल लगभग 5 हेक्टेयर है, जिसमें से 2.5 हेक्टेयर में खेती की जा रही है। सोलन जिले में प्रस्तावित सब्जी प्रदर्शन स्टेशन, बैरटी का कार्य दो भागों में किया जा रहा है जिसकी लागत क्रमश: लगभग 17 लाख और लगभग 53 लाख है।

अभी तक लगभग 17 लाख के निम्नलिखित कार्यों को पूरा कर लिया है जैसे मल्चिंग शीट के साथ ड्रिप सिंचाई प्रणाली का प्रावधान, मल्च के साथ स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली का प्रावधान, मौजूदा पॉलीहाउस का नवीनीकरण, कम्पोजिट फेंसिंग, विभिन्न स्थानों पर एलईडी लाइट्स का प्रावधान, कृषि उपकरणों का प्रावधान।

दूसरे भाग में निम्नलिखित घटक शामिल हैं : संग्रहण कक्षों का निर्माण, समग्र बाड़ लगाने वाले द्वार, खेत तक पहुंचने के लिए सड़कों का निर्माण, खलिहान की मरम्मत, कार्यालय भवन सह प्रदर्शन हॉल का निर्माण, श्रम और इनपुट का प्रावधान, स्टोर की मरम्मत, खेत में सीसी पथ का निर्माण। फार्म तक पहुंच मार्ग और बुनियादी ढांचे का काम प्रगति पर है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के अंत तक उपरोक्त सभी कार्यों को पूरा करके और फार्म प्रदर्शन के उद्देश्य से तैयार किया जाएगा। परियोजना ने किसानों और कृषि व्यवसाय कंपनियों के बीच गठबंधन को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदर्शन फार्म तैयार करने की योजना बनाई है।

जायका परियोजना की पांच उप परियोजनाएं एक ही क्षेत्राधिकार में आती हैं, इसलिए अधिकतम किसानों को इससे लाभ मिलेगा।

कृषि विभाग के बीज फार्मों को सार्वजनिक निजी भागीदारी मोड पर निजी कंपनियों के बीज और अन्य इनपुट के परीक्षण और प्रदर्शन के लिए उपलब्ध कराया जाएगा, ताकि निजी कंपनियों के बीज और अन्य इनपुट का परीक्षण किया जा सके।

अपनी बगिया को साग-सब्जी से रखेंगे भरपूर, इससे परिवार रहेगा बीमारियों से दूर

मिलेट्स से ब्रान हटाने से उनके पोषण लाभ में कमी आती है : अध्ययन

हमीरपुर। हाल ही में प्रकाशित एक अध्ययन में यह पाया गया कि मिलेट्स से ब्रान (परत) हटाने से उनके पोषण मूल्य में महत्वपूर्ण कमी आती है। नेचर स्प्रिंगर नामक जर्नल में प्रकाशित इस अध्ययन में यह खुलासा हुआ कि ब्रान हटाने से मिलेट्स में प्रोटीन, आहार फाइबर, वसा, खनिज और फाइटेट्स की मात्रा घट जाती है, जबकि कार्बोहाइड्रेट और एमीलोज़ की मात्रा बढ़ जाती है। इस अध्ययन ने साबुत (पूरा) मिलेट्स को खाने की महत्ता पर जोर दिया है, ताकि उनके स्वास्थ्य लाभ बनाए रखे जा सकें।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष:

1. पोषक तत्वों की हानि : ब्रान हटाने से मिलेट्स में प्रोटीन, आहार फाइबर, वसा, खनिज और फाइटेट्स की कमी हो जाती है, जबकि कार्बोहाइड्रेट और एमीलोज़ की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे मिलेट्स के स्वास्थ्य लाभ में कमी आ जाती है।

2. साबुत मिलेट्स की सिफारिश : अध्ययन में यह सुझाव दिया गया है कि भारतीय आहार में साबुत मिलेट्स को बढ़ावा दिया जाए, क्योंकि पॉलिश किए गए मिलेट्स के सेवन से भोजन का ग्लाइसेमिक लोड़ बढ़ सकता है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।

मिलेट्स के पोषण संबंधी लाभ :

1. खनिजों का समृद्ध स्रोत: मिलेट्स में कैल्शियम, आयरन, फॉस्फोरस और पोटैशियम जैसे आवश्यक खनिजों की भरपूर मात्रा होती है।

2. स्वास्थ्य लाभ : मिलेट्स में ऐसे फाइटो-कंपाउंड्स पाए जाते हैं, जैसे कि फेनोलिक्स, जो एंटी-एजिंग, एंटी-कैंसर, एंटी-एथेरोस्क्लेरोटिक, एंटी-बैक्टीरियल और एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर होते हैं।

2. अंतरराष्ट्रीय पहचान : 2023 में, खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ने मिलेट्स के अंतरराष्ट्रीय वर्ष के रूप में मनाया, जिसमें भारतीय सरकार का भी मजबूत समर्थन था।

साबुत और पॉलिश मिलेट्स के बीच अंतर :

1. बाजार के रुझान : 2018 के एक बाजार सर्वेक्षण में पाया गया कि पॉलिश किए गए मिलेट्स, सफेद चावल के जैसे, बड़े पैमाने पर बेचे जा रहे थे, जिससे उपभोक्ताओं के लिए पॉलिश और साबुत मिलेट्स के बीच अंतर करना कठिन हो रहा था।

2. अध्ययन किए गए मिलेट्स के प्रकार : इस शोध में छोटे मिलेट्स की किस्मों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिनमें फॉक्सटेल, लिटिल, कोडो, बार्नयार्ड और प्रोसो मिलेट्स शामिल हैं।

मिलेट्स को पॉलिश करने के कारण :

1. शेल्फ लाइफ में वृद्धि : ब्रान और जर्म को हटाने से शेल्फ लाइफ बढ़ सकती है, क्योंकि ब्रान में उच्च वसा की मात्रा होने के कारण मिलेट्स जल्दी खराब हो सकते हैं।

2. पकाने में सुधार : पॉलिश किए हुए मिलेट्स जल्दी पकते हैं और इनकी बनावट अधिक मुलायम, कम चबाने वाली होती है।

स्वास्थ्य प्रभाव और सुझाव :

1. ग्लाइसेमिक इंडेक्स पर प्रभाव : मद्रास डायबिटीज रिसर्च फाउंडेशन (एमडीआरएफ) के वी. मोहन के अनुसार, पॉलिश किए हुए मिलेट्स का ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) अधिक होता है, जो डायबिटिक व्यक्तियों के लिए समस्याग्रस्त हो सकता है।

1. अपॉलिश मिलेट्स की आवश्यकता : साबुत, अपॉलिश मिलेट्स को अधिक सुलभ बनाने की आवश्यकता है, जिससे न केवल डायबिटिक व्यक्तियों, बल्कि सामान्य जनसंख्या को भी लाभ हो सके।

शेल्फ लाइफ के लिए प्रस्तावित समाधान :

पैकेजिंग में उन्नति : डॉ. शोभना का सुझाव है कि पैकेजिंग प्रौद्योगिकियां जैसे वैक्यूम सीलिंग का उपयोग करके साबुत अनाजों की शेल्फ लाइफ बढ़ाई जा सकती है, जिससे उनके पोषण मूल्य को बिना पॉलिश किए भी संरक्षित किया जा सकता है।

संदर्भ : 1. शोभना, एस., इम्पैक्ट ऑफ डिब्रानिंग ऑन द न्यूट्रिशनल, कुकिंग, माइक्रोस्ट्रक्चरल कैरेक्टेरिस्टिक्स ऑफ फाइव इंडियन स्मॉल मिलेट्स, नेचर स्प्रिंगर, 2024।

2. मद्रास डायबिटीज रिसर्च फाउंडेशन (एमडीआरएफ), चेन्नई और इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च, हैदराबाद।

3. खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ), 2023, अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष अभियान।

4. मोहन, वी., अध्यक्ष, मद्रास डायबिटीज रिसर्च फाउंडेशन, चेन्नई।

एचपीसीडीपी किसानों के लिए स्थायी फसल विविधीकरण, आय में वृद्धि और कृषि विकास के महत्वपूर्ण कार्यों को बढ़ा रहा आगे : डॉ. सुनील चौहान

हमारे लिए यह गर्व की बात है कि हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन परियोजना के तहत हम किसानों के लिए स्थायी फसल विविधीकरण, आय में वृद्धि और कृषि विकास के महत्वपूर्ण कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। यह परियोजना न केवल किसानों की आय में सुधार करने के लिए है, बल्कि इसके माध्यम से हम प्रदेश में सिंचाई बुनियादी ढांचे के विकास, क्षमता निर्माण कार्यक्रमों और विभिन्न सब्जी उत्पादक गतिविधियों को भी बढ़ावा दे रहे हैं। हाल ही में, नेचर स्प्रिंगर जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन ने यह स्पष्ट किया है कि मिलेट्स से ब्रान हटाने से उनके पोषण गुणों में कमी आती है, जो हमारे लिए एक महत्वपूर्ण संदेश है। इस अध्ययन के अनुसार, साबुत मिलेट्स के सेवन से उनकी पोषण सामग्री अधिक बनी रहती है, जबकि पॉलिश किए गए मिलेट्स में स्वास्थ्य लाभ कम हो जाते हैं। इस संदर्भ में, हिमाचल प्रदेश सरकार ने मिलेट्स को प्राथमिकता दी है और हम ''मिलेट्स के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष'' के अवसर पर मिलेट्स के प्रचार-प्रसार को और बढ़ावा दे रहे हैं, ताकि खाद्य सुरक्षा और पोषण सुनिश्चित किया जा सके और किसानों के लिए नए रोजगार अवसर उत्पन्न किए जा सकें। राज्यभर में 14 खाद्यान्न उत्पादकता प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए हैं, जिनमें कुल 690 किसानों ने भाग लिया। इस प्रयास का मुख्य उद्देश्य मिलेट्स की खेती को बढ़ावा देना और उनके पोषणात्मक लाभों के बारे में किसानों को जागरूक करना है। हमने हिमाचल प्रदेश में 29 उप-परियोजनाओं की पहचान की है, जो खाद्यान्न उत्पादकता प्रशिक्षण और प्रदर्शन गतिविधियों के माध्यम से इस कार्यक्रम को बढ़ावा देने का कार्य कर रही हैं। इसके साथ ही, विस्तार अधिकारियों की क्षमता निर्माण के लिए टीओटी (ट्रेनिंग ऑफ ट्रेनर्स) कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया है, जिनका ध्यान मिलेट्स की खेती और उनके पोषण लाभों पर है। ये प्रशिक्षण सुंदरनगर स्थित एफटीसी में आयोजित किए गए थे। मिलेट्स को बड़ावा देने के लिए 43 हेक्टेयर में फिंगर मिलेट्स के प्रदर्शन प्लाट लगवाए गए। हम सभी के सामूहिक प्रयासों से हम न केवल हिमाचल प्रदेश में मिलेट्स की खेती को बढ़ावा देने में सफल होंगे, बल्कि इससे किसानों की आय में भी महत्वपूर्ण वृद्धि होगी और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ठोस कदम उठाए जा सकेंगे।

डॉ. सुनील चौहान
प्रधान संपादक

गोभीवर्गीय सब्जी के कीटों की पहचान व रोकथाम

कीटनाशी जीव

1. गोभी का तेला :

क्षति की प्रकृति :

क. तेला पत्तों की कोशिकाओं से रस चूसता है।

ख. पौध इसके प्रकोप से बौनी या विकृत हो जाती है।

प्रबन्धन:

क. निगरानी रखने के लिए 1-2 पीले चिपचिपे ट्रैप प्रति कनाल की दर से खेत में लगाएं।

ख. सरसों की फसल को गोभी की फसल के साथ 2:1 के अनुपात (गोभी:सरसों) में ट्रैप फसल के रूप में लगाएं।

ग. फसल पर जैविक नियन्त्रण एजेंट जैसे परजीवी डायरेटीड्लारापे और कोकसीनेलिड तथा सिरफ्रिड जैसे पर भक्षियों को प्रोत्साहित करें।

घ. नीम के तेल एवं (3 मि.ली. / लीटर पानी) 0.5 मि.ली. टीपोल प्रति लीटर के साथ छिड़काव करें।

ङ . डायमिथियोट (1मि.ली./लीटर पानी) और मैलाथियान (1 मि.ली. / लीटर पानी) में घोलकर छिड़काव करें।

संकेत : कीटनाशी जीवों को पहचानने के नियमित अन्तराल पर खेत की निरिक्षण सुनिश्चित करें।

सुझाव : सरसों की फसल को गोभी की फसल के साथ 2:1 के अनुपात (गोभी:सरसों) में लगाने से, गोभी में फूल आने की अवस्था के पश्चात सरसों सभी माहुओं/एफिड को अपनी ओर आकर्षित कर लेगा और मुख्य फसल इन कीट जीवों के प्रकोप से बच जाएगी।

2. गोभी की सफेद तितली

क्षति की प्रकृति

क. पौधे की पत्तियां गिरने लगती है।

ख. तितली की सुंडियां बंद गोभी के फूल के अंदर घुसकर नुकसान करती हैं।

प्रबन्धन :

क. पत्तों से अंडें की सुंडियों को शूरू में ही एकत्र कर नष्ट कर दें।

ख. कीटनाशी जैसे कवनलफोस (1मि.ली./लीटर)/डायक्लोरोवोस (0.5 मि.ली./लीटर)/मैलाथियान (1 मि.ली./लीटर)/फेनवेलरेट (0.5 मि.ली./लीटर पानी) में घोलकर छिड़काव करें।

सावधानी : पत्ते के पिछले भाग कीट का व्यापक प्रकोप होने से पहले पीले अंड समूहों की निगरानी और एकत्रिकरण प्रकोप को कम करने में सहायक होता है।

सुझाव : गोभी के फूलों की कटाई से 10-15 दिन पहले कीटनाशकों का छिड़काव बंद कर दें।

3. हीरक पीठ पतंगा :

क्षति की प्रकृति :

क. नवजात सुंडियां पत्तों में छोटी पीले रंग की छोटी-छोटी सुरंगे बनाती हैं।

ख. सुंडियां पत्तों की बाहरी सतह के तत्वों को खुरच कर खाती हैं, जिससे पत्तों पर सफेद झिल्ली जैसे विशेष धब्बे बनते हैं।

ग. पूर्णतय: विकसित सुंडियां पत्तों में काटकर छेद बना देती हैं और गोभी के फूल को खाती हैं और सुरंग बना देती हैं।

प्रबन्धन :

क. सरसों की फसल को गोभी की फसल के साथ 2:1 (गोभी:सरसों) के अनुपात में ट्रैप फसल के रूप में लगा सकते हैं।

ख. जैव कार्ड जो सुंडी परजीवी : डायडीगेमा सेमीक्लोसम को 1,00000/ हैक्टेयर की दर से पर्वतीय क्षेत्रों और निचले मैदानी क्षेत्रों में कोटेसियाप्लूटेली को जारी करते हैं।

ग. व्यस्क पतंगे को ट्रैप करने के लिए कम से कम प्रति कनाल एक फेरोमोन ट्रैप लगाएं। नीम बीज गुठली के 5 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। फसल पर जैव नियन्त्रण एजेंट जैसे बैसिलस थूरीनजेनसिस का छिड़काव फसल के आरम्भिक चरण में 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से करें।

घ. मेलाथियान 50 ई.सी. (1 मि.ली./लीटर) या न्यूवान 100 ई.सी. (0.5 मि.ली./लीटर) या साईपरमेथरिन 25 ई.सी. (0.3 मि.ली. /लीटर पानी) के घोल का प्रयोग गोभी वर्गीय सब्जियों की सुंडियों से नुकसान से बचने के लिए उपयोग किया जाता है।

सुझाव : ट्रैप फसलें लगाएं जो कीट पतगों को आकर्षित करने तथा उन्हें खेत में किसी निश्चित भाग में ही रोके रखने में सक्षम है। जहां उन्हें से नियंत्रित किया जा सकता है और मुख्य नकदी फसलों तक पहुंचने से रोका या कम किया सकता है।

बीमारियां :

1. पौध कमर तोड़

लक्षण :

क. यह बीमारी मुख्यत: नर्सरी की क्यारियों और पौध में दिखाई देती है, जिसके कारण बीज कम मात्रा में अंकुरित होते हैं और इस बीमारी में पौध काफी नुकसान होता है।

ख. शुरू में बीमारी कहीं-कहीं दिखाई देती है, जो बढ़कर पूरी क्यारी में फैल जाती है।

प्रबन्धन :

क. अतिरिक्त सिंचाई जल के निकास के लिए ऊंची उठी हुई क्यारियां बनाएं।

क. रिडोमिल (मेटालेक्सिल + मेन्कोजेब) 0.2 प्रतिशत की दर से या इंडोफिल एम.-45(0.25 प्रतिशत) का घोल या कॉम्पेनियन / साफ (मेन्कोजेब + कार्बनडाजिम)0.2 प्रतिशत के घोल से पौधशाला की क्यारियों को सिंचित करें।

ख. पौधशाला की क्यारियों को रिडोमिल (मेटालेक्सिल + मेन्कोजेब) के मिश्रण से 0.2 **प्रतिशत** की दर से छिड़काव करें या इंडोफिल एम.-45 0.25 प्रतिशत की दर से / बेवीस्टीन (कार्बनडाजिम) 0.1 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें।

सावधानी : अत्याधिक सिंचाई न करें और पौधशाला की क्यारी में हर वर्ष स्थान बदल कर पौध तैयार करने के लिए क्यारी बनाएं।

सावधानी : क्यारी में सही वायु संचालन हेतु उगने के बाद पौधों की छंटनी कर निकाल दें।

2. ब्लैक रॉट :

लक्षण :

क. रोगग्रस्त पौधों के पत्तों पर विशेषतय : किनारों पर से शुरू होकर तिकोने आकार के हल्के भूरे से पीले धब्बे पड़ जाते हैं।

ख. पत्तों की शिराएं काटने पर काले रंग की हो जाती हैं।

प्रबन्धन :

क. नर्सरी उत्पादन के लिए प्रमाणित रोग रहित बीज का उपयोग करें।

ख. बीज को 30 मिनट तक पानी में रखें और बाद में (50 डिग्री सैल्सियस तापमान) वाले पानी में रखें।

ग. बीज को स्ट्रेप्टोसाईक्लीन (1 ग्राम / 10 लीटर पानी) के मिश्रण में भी 30 मिनट तक रखें।

घ. फूल बनने पर स्ट्रेप्टोसाईक्लीन (1 ग्राम /10 लीटर पानी) के घोल का छिड़काव करें।

ङ. बीमारी की रोकथाम के लिए स्ट्रेप्टोसाईक्लीन (1 ग्राम/10 लीटर पानी) और बलाईटोक्स (3 ग्राम / लीटर)पानी के घोल का छिड़काव करें।

सुझाव : गैर गोभीवर्गीय फसलों के साथ कम से कम तीन वर्षीय फसलचक्र अपनाएं (गोभीवर्गीय फसलों के अवशिष्ट पूरी तरह विघटन के लिए 2-3 वर्ष का समय लेते हैं)। उचित वायु संचार के लिए पौधों के बीच उचित दूरी बनाए रखें।

3. मृदु रोमिल आसिता (डॉउनी मिल्ड्यू) :

लक्षण :

क. संक्रमित पौधों की पत्तियों की निचली सतह पर फफूंदी की स्लेटी रंग की मृदुरोमिल वृद्धि हो जाती है।

ख. संक्रमित पौधों की पत्तियों की ऊपरी सतह पहले पीली और फिर भूरी या सड़ जाती है।

प्रबन्धन :

क. रोग प्रतिरोधी प्रजातियों का प्रयोग करें।

ख. फसल रिडोमिल एम.जैड (2.5 ग्रा./लीटर पानी) का छिड़काव 10-15 दिनों के अन्तराल पर करें।

ग. बूंदों को बहने से रोकने के लिए फफूंदनाशक के साथ स्टीकर (1 मि.ली. /लीटर) का प्रयोग करें।

सुझाव : पौधों में आपस की दूरी अधिक रखें, ताकि पत्तियां एक-दुसरे के साथ सीधे सम्पर्क में न रह सकें। यह बीमारी के प्रकोप को कम करने में सहायक होगा।

4. स्टॉक रॉट :

लक्षण :

क. संक्रमण पणीले गोल क्षेत्रों से आरम्भ होता है। जो जल्दी ही सफेद रोएंदार फफूंद की वृद्धि से ढक जाते हैं।

ख. जैसे ही बीमारी बढ़ती है, प्रभावित उत्तक नर्म व जलसिक्त हो जाते हैं।

प्रबन्धन :

क. रोग ग्रस्त पत्तियों को नष्ट करें।

ख. बैविस्टिन 0.5 ग्राम /1 लीटर पानी के घोल में या मैन्कोजेब 2.5 ग्राम /1 लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

सुझाव : भूमि का समतलीकरण और मेढों या ऊंची उठी हुई क्यारियों में रोपाई भी रोग के प्रकोप को कम करेगा, क्योंकि यह क्रियाएं जल निकास में सुधार और मिट्टी की सतह को सूखा रखने में सहायक होती हैं।

स्त्रोत : पैकेज एंड प्रैक्टिसिस, सीएसके एचपीकेवी, पालमपुर

अपनी बगिया को साग-सब्जी से रखेंगे भरपूर, इससे परिवार रहेगा बीमारियों से दूर

किसानों को कृषि तकनीकी ज्ञान और विपणन के नए अवसरों पर मार्गदर्शन

मण्डी। 12 नवम्बर को गम्भर खड्ड और झाझर नाला से जारल रोपा सिंचाई उप परियोजना में जिला परियोजना प्रबंधन इकाई, मण्डी द्वारा किसानों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। इसमें किसानों को कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर मार्गदर्शन के साथ कृषक विकास संघ को अपनी नियमित बैठकें आयोजन करने की सलाह दी गई, ताकि आगामी मौसम से सम्बंधित कृषि कार्यों की योजनाएं बनाई जा सकें। इसके अलावा, किसानों को सब्जियों का उत्पादन बढ़ाने और इसे वाणिज्यिक रूप से सफल बनाने के लिए प्रेरित किया गया। इस बैठक में प्रबंधन समिति के सदस्यों से अनुरोध किया गया कि वे कृषक विकास संघ के रजिस्टर में बैठकों एवं उनमें लिए निर्णयों और विभिन्न गतिविधियों का नियमित रूप से रिकॉर्ड रखें। सिंचाई संरचनाओं के रख-रखाव के लिए भी मासिक संग्रह और उसके रिकॉर्ड को कैश बुक और लेजर में रखने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। साथ ही किसानों को अपनी फसल उत्पादन की सभी प्रक्रियाओं और क्रिया-कलापों को अपने रजिस्टर में दर्ज करने

की भी सलाह दी, ताकि सिंचाई सुविधाओं के निर्माण से पहले और बाद के बदलावों का मूल्यांकन किया जा सके। बैठक के दौरान किसानों को विपणन की रणनीतियों के बारे में भी जागरूक किया गया। उन्हें यह बताया गया कि बाजार की मांग के अनुसार फसलों की खेती करने से बेहतर मूल्य मिल सकता है। साथ ही, बड़े पैमाने पर फसल उत्पादन को बढ़ावा देने की बात की गई, ताकि विपणन के लिए आसानी से बड़े उत्पाद तैयार हो सकें। विशेष रूप से किसानों को लाल चावल उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया, क्योंकि यह उत्पाद बड़े पैमाने पर उत्पादन के बाद अच्छी बिक्री की संभावनाएं रखता है। इस दौरान, एक बीघा भूमि पर लगे ब्लैक गेहूं के प्रदर्शन प्लॉट का मुआयना भी किया गया और उपस्थित किसानों को गेहूं में महत्वपूर्ण कृषि तकनीकों के बारे में बताया गया जैसे गेहूं की फसल के लिए उपयुक्त दूरी, कौन-कौन सी खादें, उनकी मात्रा और कौन सी खादें कब कब देनी चाहिए, खरपतवारनाशक की सही मात्रा और रोग प्रबंधन कैसे किया जाए। इस बैठक में डीडी शर्मा (उप परियोजना निदेशक), आरके शर्मा (पीएमसी विशेषज्ञ), हेम राज वर्मा (जिला परियोजना प्रबंधक, मण्डी), पवन कुमार (खंड परियोजना प्रबंधक, मण्डी), हंस राज (कृषि विकास अधिकारी) और अन्य अधिकारी मौजूद थे। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को आने वाली विस्तार गतिविधियों के लिए जागरूक करना और उनकी क्षमता का निर्माण करना था, ताकि वे परियोजना की गतिविधियों में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले सकें।

सिंचाई परियोजना मयूर कूहल गेमुर में नुक्कड़ नाटक की मदद से दी परियोजना की जानकारी

कुल्लू। केलांग से लगभग 20 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत गेमुर में बन रही सिंचाई परियोजना मयूर कूहल जोकि खण्ड परियोजना प्रबंधन इकाई, कुल्लू के द्वारा इसका निर्माण करवाया जा रहा है। इस सिंचाई परियोजना का कुल कमांद क्षेत्र 12.96 हेक्टेयर है और इसकी बनने की अनुमानित लागत 35.46 लाख है। इस उप-परियोजना में लाभार्थी किसानों की संख्या 27 है। परियोजना चरण-2 का हमेशा ये प्रयास रहा है कि लाभार्थी किसानों तक सभी योजनाओं को विभिन्न माध्यमों द्वारा पहुंचाया जाए वो चाहे सोशल मीडिया हो, प्रिंट मीडिया या फिर नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से हो, इसी योजना को आगे बढ़ाते हुए 7 नवंबर, 2024 को एक नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया है जिसमें 20 किसान मौजूद रहे। उनको परियोजना चरण-2 में चल रही सभी गतिविधियों से स्थानीय गीतों और बोली के माध्यम से समझाया गया।

नुक्कड़ नाटक के उद्देश्य

1. परियोजना की विभिन्न गतिविधियों के बारे में किसानों का ज्ञान बढ़ाना।
2. परियोजना की विभिन्न योजनाओं की पहचान के बारे में किसानों की क्षमता का निर्माण करना।
3. उप-परियोजना में लक्षित समूहों के लिए सिंचाई सुविधाओं, प्रशिक्षणों और प्रदर्शनों जैसे परियोजना हस्तक्षेपों की योजना और निष्पादन के बारे में किसानों को जागरूक करना।
4. मशीनरी और उपकरणों के बारे में किसानों का ज्ञान बढ़ाना।
5. वित्त एवं बैंकिंग से संबंधित सभी निर्णयों के बारे में प्रबंधन समिति और उसकी शक्तियों से अवगत कराना।

किसानों के खेतों में लगाए प्याज के प्रदर्शन प्लाट

ज्वाली। खण्ड परियोजना प्रबंधन इकाई, ज्वाली के द्वारा उठाऊ जल सिंचाई योजना समून-1 तथा समून-2, गांव समून, ग्राम पंचायत बलीर जिला कांगड़ा में बनाई जा रही है

जिनका कमांद क्षेत्र क्रमश: 20.90 हैक्टेयर और 18.49 हैक्टेयर है। समून -2 का निर्माण कार्य प्रगति पर है और समून-1 सिंचाई योजना का निर्माण कार्य भी जल्दी शुरू होने वाला है। वीरवार 21 नवंबर 2024 को उठाऊ जल योजना समून-1 तथा समून-2 में प्याज की फसल और खेत पर बुनियादी इंजीनियरिंग कौशल पर विधि के विषय में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन और प्रदर्शन प्लाट लगाया गया जिसमें उप परियोजना के लाभार्थी किसानों ने भाग लिया। इस शिविर में किसानों को सिंचाई परियोजना के रखरखाव व संचालन, सदस्यता शुल्क और कृषक विकास एसोसिएशन के नियम और जिम्मेदारियों के बारे में भी बताया गया तथा किसानों को प्याज का बीज भी वितरित किया गया। इस शिविर में खण्ड परियोजना प्रबंधक डॉ. लक्षित चौधरी, एक्सटेंशन तथा इंजीनियरिंग स्टाफ शामिल रहा।

किसानों को बांटा सब्जियों और गेहूं का बीज

रामपुर। हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण परियोजना-2 के तहत खण्ड परियोजना प्रबंधन इकाई, रामपुर ने विभिन्न पंचायतों में चल रहे परियोजना के निर्माण कार्यों के लाभार्थी किसानों को गेहूं का

और सब्जियों के बीज एवं खाद बांट कर उन्हें वैज्ञानिक रूप से खेती करने की सलाह दी। परियोजना के अधिकारी किसानों को अपने खेतों में बिना जहर के छिड़काव वाली सब्जियों के साथ-साथ गेहूं की खेती करने के लिए भी किसानों को प्रोत्साहित कर रहे हैं ताकि सभी किसान अपना खुद अनाज उगा कर संपूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। किसानों को एक दिवसीय शिविरों में कम से कम जहर का छिड़काव अपनी फसलों करने की हिदायत दी जा रही है ताकि उनके परिवार इनके दुष्प्रभाव से बचे रहें।

झझर नाला से जराल रोपा में लगाया लहसुन का प्रदर्शन प्लाट

मण्डी। खण्ड परियोजना प्रबंधन इकाई, मण्डी के अंतर्गत बनाई गई सिंचाई परियोजना झझर नाला से जराल रोपा को अक्टूबर माह में किसान विकास संघ को सौंप दिया था। इस सिंचाई परियोजना की निर्माण लागत लगभग 33 लाख थी, जिसका कमाद क्षेत्र 9.5 हेक्टेयर है इसके बनने से 60 किसान परिवार लाभान्वित हुए। पहले यहां के किसान धान, गेहूं की फसल को ही उगाते थे पर जब से हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन परियोजना चरण-2 ने यहां कूहल का निर्माण कार्य करवाना शुरू किया तब से सभी किसानों को सब्जियों के उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है इसके लिए किसानों के खेतों में समय-समय पर प्रदर्शन प्लाट लगाए जाते रहे हैं। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए इस बार 2.5 बीघा में 1 क्विंटल जीएचसी-1 किस्म का लहसुन का बीज 4 किसानों (धर्मेंद्र सिंह पुत्र संत राम, दया सिंह पुत्र भीखम राम, कृष्ण चंद पुत्र जिंदू, कांशी राम पुत्र लेख राम) को देकर उनके खेतों में प्रदर्शन प्लाट लगाए गए हैं।

प्रदर्शन प्लाट लगाने का उद्देश्य : 1. लहसुन की उचित खेती के तरीकों के बारे में किसानों का ज्ञान बढ़ाना। 2. लहसुन के विभिन्न रोगों और कीटों की पहचान के बारे में किसानों की क्षमता का निर्माण करना। 3. अंतराल, उर्वरक खुराक और फसल की वृद्धि, इलाज, भंडारण और भंडारण में विभिन्न रोगों के महत्वपूर्ण चरणों के बारे में ज्ञान होना। 4. भंडारण में अंकुरित होने से बचने के लिए लहसुन के भंडारण के तरीकों। 7. लहसुन की फसल की गुणवत्ता और भंडारण जीवन पर लौंग के आकार और विभिन्न जैविक उर्वरकों के प्रभाव के बारे में जानकारी होना।

दो सिंचाई परियोजनाओं को जल्द करेंगे किसानों के हवाले

सरकाघाट। हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन परियोजना (चरण-2) के अंतर्गत खंड परियोजना प्रबंधन इकाई, सरकाघाट के तहत उठाऊ सिंचाई योजना बग्गी पोंटा का निर्माण करवाया जा रहा था जो लगभग 58 लाख की लागत आई जोकि 19.97 हेक्टेयर क्षेत्र के 59 लाभार्थी किसानों की भूमि को सिंचित करेगी। इस उप परियोजना के 10 लाभार्थी किसानों को लहसुन के बीज वितरित किया गया और कुछ कार्य लगभग पूरा कर लिया है जिसको बनाने में लगभग 21 लाख रूपये का खर्चा आया। इसके बनने से 56 किसानों की लगभग 8 हेक्टेयर भूमि को पानी मिलना शुरू हो जाएगा।

सिंचाई परियोजना के

अब पूरा हो गया है। डॉ. अश्वनी कुमार खंड परियोजना प्रबंधक का कहना है कि इस सिंचाई परियोजना को 10 दिसंबर से पहले कृषक विकास संघ को हस्तांतरित कर दिया जाएगा। इस सिंचाई परियोजना को बनाने में किसानों ने जायका वेजिटेबल गार्डन का कार्य भी शुरू कर दिया है जिसमें की सभी तरह की सब्जियां उगाई जा रही हैं। इसी खंड परियोजना प्रबंधन इकाई सरकाघाट द्वारा बहाव सिंचाई योजना घुलानु का भी निर्माण लाभार्थी किसानों में से 13 किसानों को लहसुन, 15 किसानों को प्याज के बीज वितरित किया गया और कुछ किसानों ने जायका वेजिटेबल गार्डन में सभी तरह की सब्जियां उगाना शुरू कर दिया है।

किसानों ने किया बाजार सर्वेक्षण : बनाया आगामी मौसम के लिए फसल कैलेंडर

चम्बा। दिनांक 13.11.2024 को सिंचाई परियोजना दुल्ला के लक्षित किसानों को जिला सब्जी मंडी, बालू में बाजार सर्वेक्षण, लक्षित फसल चयन और फसल कैलेंडर को समझने के उद्देश्य से एक दिवसीय बाजार भ्रमण आयोजित किया गया जिसमें 7 लाभार्थियों किसानों ने भाग लिया। इस सर्वेक्षण से किसानों ने बाजार की कीमतों के साथ-

साथ सब्जी की मात्रा तथा विशिष्ट उपज के लिए आवश्यक गुणवत्ता, कीमतों में मौसमी उतार-चढ़ाव और भुगतान के तरीके के बारे में सीखा। किसानों ने व्यापारियों से बातचीत के दौरान उनको ये भी समझाया गया कि अगर आप सब किसान बाजार की मांग अनुसार सब्जी उत्पादन करें तो हमें पहले से ज्यादा फायदा हो सकता है। लाभप्रदता, कृषि पारिस्थितिक स्थिति तकनीकी कौशल और वित्तीय क्षमता जैसे विभिन्न कारकों को ध्यान में रखते हुए खीरा, टमाटर, मूली और मटर जैसी लक्षित फसलों का चयन किया गया। लक्षित किसानों को विस्तार अधिकारियों द्वारा फसल कैलेंडर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जिससे उनको बाजार और मौसम अनुसार सब्जी उत्पादन कर सकें जिससे होने वाला लाभ आसानी से समझ आ सके।

सिंचाई योजना खतरोड़ में बांटे फूलगोभी और ब्रोकली के पौधे

हमीरपुर। 27 नवम्बर, 2024 को खण्ड परियोजना प्रबंधन इकाई, हमीरपुर के अंतर्गत बन रही उठाऊ जल सिंचाई योजना खतरोड़, गांव खतरोड़, ग्राम पंचायत जसाई, तहसील नादौन में सिंचाई और जल प्रबंधन के सिद्धांत पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 35 लाभार्थी किसानों ने भाग लिया। ट्रेनिंग में किसानों को जल प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों के बारे में जानकारी दी गई और फूलगोभी एवं ब्रॉकली के पौधे भी लाभार्थियों में वितरित किए गये। इस मौके में खण्ड परियोजना प्रबंधक, हमीरपुर, जीत राम, कृषि विकास अधिकारी विवेक शर्मा, कृषक विकास एसोसिएशन के प्रधान भाग सिंह मौजूद रहे।

खण्ड प्रबंधक द्वारा निर्माण कार्य का लिया जायजा

गोहर। 16 नवम्बर, 2024 को खण्ड परियोजना प्रबंधन, गोहर के द्वारा सिंचाई परियोजना गधीमंण-मझोठी और सुरथी-थाची में चल रहे निर्माण कार्यों का निरिक्षण किया तथा सम्बंधित ठेकेदार को निर्माण कार्यों में तेजी लाने और निर्माण के कार्यों की गुणवत्ता ठीक रखने के निर्देश दिए।

इसके साथ ही लाभार्थी किसानों से निर्माण कार्यों और अगली फसल के बारे चर्चा करते हुए उनसे आग्रह किया कि आप भी हो रहे निर्माण कार्यों की निगरानी करते रहे ताकि इन सिंचाई परियोजना का कार्य सही से हो सके।

हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन परियोजना-2 (जायका ओडीए) के स्वामित्व में डॉ. सुनील चौहान, परियोजना निदेशक द्वारा परियोजना भवन, कृषि परिसर, हमीरपुर-177001 से संपादित, प्रकाशित एवं मुद्रित।
प्रधान संपादक: डॉ. सुनील चौहान, परियोजना निदेशक। सलाहकार संपादक: राजेश्वर ठाकुर।
संपादक: डॉ. जगदीश जंजीहा, विषय-विशेषज्ञ (सूचना-शिक्षा-संचार)। सम्पादकीय सहयोग: ज्योति ठाकुर, शालभ ठाकुर और अंकुश पटियाल। फोन: 01972-223059. ई-मेल : iechpjicaagriculture9@gmail.com